[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3677

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगो की सामाजिक स्वीकार्यता

प्रो. शशिकला दुबे, सहा .प्राध्यापक – समाजशास्त्र,
शास. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महा., किला भवन, इन्दौर

निखिल प्रकृति में विहँसते नानाविध रंग निहारने वालों की तबीयत हरी कर देते हैं। 'तबीयत का हरा होना' एक मुहावरा है, जो खुश, आनंदित, प्रफुल्ल और तरोताजा जैसे प्रीतिकर भावों को व्यक्त करता है। कदम्ब, कृष्ण और कालिन्दी का स्मृति–विज्ञान हरित, श्याम और नीलवर्ण का आभास हमारे मन में पैदा कर जाता है। आभास बोध का मानवी गुण–धर्म ही रंग या वर्ण होते हैं।प्रमुख रूप में मुख्य रंग केवल तीन ही होते हैं, लाल, नीला औश्र पीला। इन्हीं तीन रंगों के पारस्परिक मिश्रण सें दूसरे–दूसरे रंग तैयार होते हैं। जैसे लाल और पीला मिलकर केसरिया रंग बनाते हैं, नीला और पीला मिलकर हरा और नीला तथा लाल मिलकर जामुनी रंग तैयार करते हैं। इनके अतिरिक्त सफेद और काला रंग भी मूलरंग में अपना योगदान देते हैं।रंग हजारों वर्षों सें हमारे जीवन में अपनी जगह बनाए हुए हैं। कपड़ा उद्योगों के विकास के कारण प्राकृतिक रंगों की तुलना में कृत्रिम रंगों का उपयोग जोरो पर होने लगा है। फलस्वरूप पीपल, गूलर और पाकड़ में पैदा होने वाली 'लाख' से रंग बनाने की प्रक्रिया के एवज में रासायनिक तौर पर कई प्राकृतिक रंगों का निर्माण हुआ, ये रंग मानवी जिज्ञासाओं में दमकीले, चटकीले, भड़कीले इत्यादि की संज्ञाओं से अभिहित होकर स्थापित हुए।

हर रंग कुछ कहता है – यदि सामाजिक दृष्टि में रंगों का अन्वेशण करें तो समाज में विभिन्न रंगों की अपनी महत्ता है। रंगों का आश्रय लेकर ही समाज में मनुष्यों के चेहरों के भावों को पढ़ा जाता है। गुस्से की वजह से लाल हुआ चेहरा, लाल अंगारा की तरह प्रतीत होता है, आषा आदि की व्यर्थ कल्पना में निमग्न चेहरा हरा दिखाई पड़ता है, निर्लज्ज चेहरा सफेद चश्म की भाँति जान पड़ता है। इसी प्रकार शराब पीने का शौकीन शराब को लाल परी या लाल पानी कहता है। लोकमत के विरूद्ध बनाए गए कानून को काला कानून कहा जाता है। ऐसा झूठ जो ऊपर से देखने पर ही साफ झूठ मालूम पड़े औश्र वस्तुस्थिति के स्पष्ट विपरीत हो वह सफेद झूठ माना जाता है। शरीर पर कड़ी मार पड़ने से शरीर नीला पड़ जाता है। इसी प्रकार तेज या आभा रहित चेहरा पीला पड़ जाता है।

रंगों के व्यावहारिक प्रकार्य – समाज में विवाह का निमंत्रण पत्र प्रायः पीली चिट्ठी के रूप में प्रेषित करने का रिवाज है। मुस्लिम समुदाय में लोगों में मेहँदी की रस्म होती है जो ब्याह की एक रस्म के रूप में अनिवार्यतः व्यवहार में लाई जाती है।

रंगों की अस्मिता – हरा रंग सदैव ही सब्ज, खुश, आनंदित और प्रफुल्ल होने का संकेत देता है, काला रंग का आशय कृ ष्णवर्ण, कलुषित, इत्यादि से है। चेहरे पर पड़ा काला तिल, शायरों की दृष्टि में चेहरे पर बैठा पहरेदार होता है। श्वेत कबूतर वैश्विक अर्थों में शान्ति का प्रतीक माना गया है।

रंगों की पूछ–परख – खान–पान और पहिरावों में रंगों का अपना खास जमावड़ा है। जलेबी में केसर न हो तो रसीली होकर भी जलेबी रसीली नहीं लगती। केसरिया दूध का अपना महत्व है। मीठा पीला रंग चावल को 'जर्दा' और बेसन को बेसन चक्की बना देता है। कत्थई रंग के शौकीन दावत खाने में उन्हीं परियों को पसंद करते हैं जो कत्थई अथवा खैरी सिकी गईं हों। इसके विपरीत पूजाघर में पुरूष लाल–पीले रंग के 'सोले' और स्त्रियाँ विभिन्न रंगों की साड़ियाँ पहिनी हुई होती हैं।

और भी कई रंग होते हैं जैसे लालच के रंग, भूख से तिलमिलाने के रंग, ब्याह शादी में समधियों को दी जाने वाली गालियों के रंग, मुहब्बत का रंग। किसी ने खूब कहा है,

"मिले रंग से रंग तो बदरंग हो जाए
न मिले रंग से रंग तो मजा नहीं आए"

संदर्भ –

(1) वृहत् हिन्दी कोष, सम्पादक कालिका प्रसाद, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणासी।